IJAER/ March-April 2023/Volume-12/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

शेखावाटी के निर्गुण भक्ति साहित्य में माधुर्य साधना

डॉ. मन्जुलता सैनी
सहायक आचार्य– हिन्दी साहित्य
राजकिय कन्या महाविद्यालय, फतेहपुर–सीकर (राज.)

माधुर्य साधना

निर्गुण संत कवियों के पदों, वाणियों और सबद में जो जीवात्मा और परमात्मा के सम्बन्ध को प्रकट किया है, वह आध्यात्मिक तो है ही लेकिन फिर भी उसमें माधुर्य (प्रेम) भाव की प्रधानता रही है क्योंकि ये भक्त कवि भी इस बात को मानकर चलते हैं कि प्रेम या अनुराग का भाव ही भक्ति और भगवान के सम्बन्धों को भी किसी प्रकार सीमा में नहीं बांधा जा सकता। इस माधुर्य साधना (भाव) की प्रस्तुति कई रूपों में दिखाई देती है–

1. नाम महिमा

निर्गुण संतों की भक्ति साधना में नाम महिमा का बड़ा महत्त्व है। उन्होने ज्ञान, कर्म योग आदि साधनों को अपेक्षा नाम को श्रेष्ठ साधना के रूप में स्वीकार किया है। भानीनाथ ने कहा है –

नाम हमारो है आधारो।

संतदास कहते हैं –

सुमरण बना सुणो हंस राजाजी भोत घणा दुःख पावोला
अबकाली थे फेंरू आवोला, पण मिनख जमारो नी पावोला।।
सांचा सबद म्हारा गुरांजी फरमाया नीजनाम प्रकाश्या रे
संतदास निज भजै नाम नै, सुरगा में सुख पाया रै।[1]

शंकरदास कहते है –

हर भज भज हीरा परावल, समय पकड़ले मजपूजी
अष्ट कमल पर खेलै हंसलो, बाकी सगली बांता झूठी।।[2]

इसका तात्पर्य यह है कि निर्गुण निराकार का स्मरण हो सब प्रकार के बंधनों के मुक्ति दिलाने वाला है। उनकी मधुर भाव साधना का आलम्बन वस्तुतः नाम ही है, वह चाहे हरिराम हो या राम हो लेकिन वह पुराण प्रतिपादित राम से अलग है। वे ब्रह्म के अवतारों रूपों से भी सर्वथा भिन्न हैं। वह किसी दार्शनिक वैदिक मानदण्ड से परे हैं तार्किक बहस से ऊपर हैं, पुस्तक की विद्या से अगम्य हैं पर प्रेम से प्राप्य हैं, अनुभूति का विषय है, सहज भाव से भावित है।[3] इसलिए इन निर्गुण भक्तों का निर्गुण राम है। भक्त लोग भी ऐसे राम को जानते हैं तो भगवान भी अपने भक्तों को पहचानते हैं इसीलिए वे उसका स्मरण करते हैं उनका यही मानना है कि यह संसार तो क्षण भंगुर है, इस संसार में कोई किसी का संगी नहीं है, यह जीवन तो माटी की गणगौर के समान है जिसे एक रोज कुए में धमकाना पड़ेगा –

ले सुवा हरीनाम नाम से जीर जासी।

तेरो संगी नहीं संसार काया कोटड़ी है काची।
सिमरन शारदा मात, शारदा तू है सांची।
लागू गुरू के पाय, गुरू पोथी बांची।
कुण तेरो माय अर कुण तेरो बाप कुण तेरो संग साथी
कुण करै आदर भाव कुण आगो लेसी।।
तेरो हीरा लेसी तोड कुवै में धमकासी।
दिन चार को खेल पलक में खिंड जासी।।

इस तरह निर्गुण संतों ने अपनी भजन साधना में नाम स्मरण का महत्त्व स्वीकार हे। शेखावाटी के निर्गुण संत चाहे नाथपंथी हो या दादूपंथी वे सभी अपनी साधना में नाम के महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं।

2. माधुर्य भाव

हिन्दी संत साहित्य में आत्मा और परमात्मा के रहस्यमय माधुर्य की साधना नर और नारी के आपसी आकर्षण और प्रेम मिलन के उदान्तीकरण के ऊपर निर्मित है। यही कारण है कि शेखावाटी के निर्गुण संत भक्तों में ये भी वही भाव दिखाई देता है क्योंकि भक्त अपने भगवान के लिए सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार है, उसके लिए अपने प्रिय भगवान से बढ़कर कोई भी नहीं है–

संतों पिव से डोर लगाओ।
जन्म मरण दुःख मेटा चाहो, तो समता चित लाओ।।
काम क्रोध मद लोभ हटाकर, सह संतोष जगाओ।
प्रेम माहि तन्मय हो ऐसे, तनकी सुरति भुलाओं।।
गद् गद् रहो मौत व्रतधारी, हट्टकर आसन लाओ।
धार त्रिवेणी पीव मिलेंगे, रूप में रूप समाओ।।[4]

भक्त बार–बार अपने प्रिय से मिलने का अनुग्रह करता है। यह संसार तो भ्रमचाल है, हमसे मुक्ति तभी मिल सकती है जब उस परमतत्व के प्रति प्रेम पैदा होगा और मन उसी परमतत्व में रम जायेगा –

हेली उठ चालो हर के देश, यह तो तेरा कुण है री।
उठ चालो मालिक जी रे देश।।
तज हेली सांस बांस सुध तन का आगेलोवा है दमदम का।
हां म्हारी हेली कर झटको जुग बीत्यो रे।।

इस तरह जीवात्मा के मन में उस परम प्रियतम के प्रति प्रेम का भाव दिखाई देता है और वह उसके प्रणय विलास के लिए भाव–भगति का केन्द्र बनाकर माधुर्य भाव का अपूर्व परिचय देती है। संत साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान पं. परशुराम चतुर्वेदी ने संतों की इस भावना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उनके पदों में उनकी कोमलता और भावुकता का स्पष्ट स्वर सुनाई देता है।[5] यह माधुर्य भाव ही निर्गुण संतों की साधना का सहज और प्रेममय स्वरूप है। इस तरह भगवान भक्त का सम्बन्ध तो सोने और सुहागा जैसा है। स्वर्ण के स्वरूप को सुहागा निखार कर कान्तिमय बना देता है, इसी प्रकार भक्त भी अपने

सामने भगवान के निखरे रूप को प्रस्तुत करता है ताकि परमतत्व की निकटता पा सके। इस तरह इन निर्गुण साधकों सुन्दरदास, भीषजन, गुलाबनाथ बन्नानाथ, ज्ञानसमुद्र आदि का साधना माधुर्यभाव से परिपूर्ण है। इन्होने बाह्यचार का घोर विरोध किया और यह माना कि ब्रह्म इन बाह्य जप तप आदि में नहीं है। केवल माधुर्य (प्रेम) भाव ही ऐसा है जो भक्ति साधना का प्रबल आधार है और इसी से परमात्मा की प्राप्ति होती है। निर्गुण संत चतुरदास कहते हैं –

प्रेम गुरू मिलता जाज्योजी, म्हारे जीवरियारी बात बाप जी
कहता जाज्यो जी
सतगुरू आया सब रंग ल्याया, प्याला प्रेम का प्याया।
सतगुरू म्हारा बड़ा शूरमा, सहजा राम मिलाया।।[6]

इस तरह माधुर्य भाव की तल्लीनता ही भक्त में प्रभु के प्रति दृढता पैदा करती है।

3. माधुर्यमय रहस्यवाद

निर्गुण संतों के काव्य में माधुर्यमय रहस्य वाद का सुन्दर चित्रण किया है क्यों उनके पदों में मिलन का बड़ा ही रहस्यमय स्वरूप दिखाई देता है। वास्तव में देखा जाये तो सच्चा प्रेमी वही है जो परमात्मा से मिलने के आनंद को जानता है क्योंकि ऐसे आनंद की अनुभूति प्रत्येक व्यक्ति को नहीं हो सकती। जिस प्रकार सुहागन स्त्री ही प्रिय से मिलने का सुख जानती है ठीक उसी प्रकार भक्त भी परमात्मा से मिलने के आनंद की अनुभूति को जानता है और इस आनंद के लिए वह अपना सबकुछ त्यागने के लिए तैयार रहता है –

पिंजरै वाली मैना, भजो ना सिया राम राम।
रंग–रंगीला बण्या पिंजरा जिसमें रहती मैना।
जहर पियाला कच्चौ पीवै, अमृत पीवै मैना।।[7]

इसी तरह निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना पर जोर देते हुए कहा है कि बाह्याचार से प्रभु की प्राप्ति नहीं हो सकती बल्कि वह तो निराकार साधना में लीन होकर मकड़ी जिस प्रकार अपने द्वारा निर्मित तार की सहायता से ही महल के शिखर तक पहुँच जाती है उसी प्रकार वह भी अजपा साधन के द्वारा ब्रह्मरंध्र तक पहुँच कर सत्यलोक की प्राप्ति करता है–

महर करो जद जीऊ सतगुरू दया करो जद जाऊंगी
प्रेम पियाला पी हरि रस का लाल मगन हो जाऊंगी।।[8]

साधक जिस आनंद में राममग्न होकर प्रभु को प्राप्त करता है, वह अनिवर्चनीय है और इस स्थिति तक पहुँचने को मधुर भाव साधना ही साधक को सफलता है इस अवस्था को ही संतों ने माधुर्यमय रहस्यवाद की संज्ञा दी है–

साधो अलख लखे सोही शूरा।
जाग्रत स्वप्न सुषुति तजकर हो तुरिया में पूरा।।
हो लवलीन अमीरस पीवै, कर दुविधा को दूरा।
घाट त्रिवेणी बाट ब्रह्म की लाभ करे पर रूड़ा।।[9]

संतों ने अपनी वाणियों में अपने जिस अनुभव को प्रकट किया है, वह कई जगह अजीबो गरीब प्रतीत होता है उसका कारण यह है कि इन संतों ने अपने अनुभव को सहज वाणि में प्रकट करने की कोशिश की है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने

माधुर्यमय रहस्यवाद पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि संतों की वाणियों में अष्फुट अभिव्यक्ति को ही प्रधानता है। संतों की साधना पद्धति और सिद्धान्त पक्ष पर विचार करते हुए हमने देखा कि संत मूलतः अनुभव को ही साधना का चरम मानते हैं स्वानुभूति की स्थिति यथार्थ में अभिव्यक्तिपरक नहीं है। उसमें निमज्जित हो जाने पर किसी अन्य तत्व का स्मरण नहीं रहता अतएव स्वानुभूति की अभिव्यक्ति भी अस्पष्ट हो जाती है। और उसी को रहस्यमयी भी कहा जा सकता है। संतों की यह स्वानुभूतिपरक अस्पष्ट भावना काव्य में रहस्यवाद के नाम से आभहित की गई है।[10] दूसरी तरफ विद्वानों का कहना है कि संतों की इस प्रकार की वाणियों को रहस्यवाद की कोटि में अवश्य रखते हैं लेकिन रहस्यवाद न तो कोई वाद है, न कोई सिद्धान्त, उसमें परमसत्ता की प्रत्यक्षानुभूति का भाव निहित है।[11] वास्तव में देखा जाये तो रहस्यवाद में आत्मा का उस अन्तर्निहित प्रवृत्ति का प्रकाशन होता है जिसमें उसका दिव्य एवं आलौकिक शक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।[12]

इस तरह संत काव्य में माधुर्य भाव के कारण सहज आनंद की स्थिति उत्पन्न हो गई है और साधक को इस प्रेम में प्रवृत करने का श्रेय गुरू को दिय जाता है। साधक वर गुरू के बारे में कहता है –

गुरू बिन घोर अंधेरा साधो गुरू बिन घोर अंधेरा।
जैसे मंदिर दीप बिना सूना, ना वस्तु का बेरा।।
पथरी माहि अग्नि बसत है ना पथरी ने बेरा।
चकमक चोट लगे पथरी पर, फैले आग चोफेरा।।[13]

संत भानीनाथ रहते है –

गुरू जैसा दाता जग में कोई नहीं, सब जग मांगण हारा रै।
कोई रंक कोई बादशाह सबनै हाथ पसारयाा रै।।[14]

इसी तरह गुलाबनाथ कहते हैं –

म्हारै गुरूआं आगे करांगा पुकार, नैया म्हारी पार लगावो।[15]

और चतुरदास कहते हैं –

गुरांसा सुणो भगत को हेलो
आज देव गजानन्द नै सुमरां निवण सरस्वती न पहलो
निवण का म्हारे गुरां पीरां नै सुधबुद्ध ज्ञान म्हानै देलो।।[16]

आत्मा परमात्मा के परस्परिक आनंद भाव का रहस्यवाद के अन्तर्गत चित्रण करते हुए गुलाब नाथ ने एक रूपक के माध्यम से भाव–सौन्दर्य का सुन्दर चित्रण किया है–

हीण्डो तो घलाके सतगुरू म्हारा बाग मंत्री
सतगुरू म्हारा हिण्डे हिण्डे सुरता नार।।
काया तो नगरिये में सतगुरू म्हारा आमलीजी
सतगुरू म्हारा छायी च्याख मेरे।।
अगर चंदन को सतगुरू म्हारो पालणो जी
सतगुरू म्हारा रेशम डोर घलाय।।

पांच सखी मिल पाणीडे न निसटी जी
सतगुरू मेरा पांचू ही एक उणियार।
नाथ गुलाब से सतगुरू म्हारा विनती जी
सतगुरू मेरा गावें गावें भानीनाथ।[17]

इसी तरह जीवात्मा श्रृंगारित होकर सतगुरू से मिलने के लिए जाती है अर्थात् अज्ञानता को मिटाकर ज्ञान प्राप्त करती है –

सतगुरूवों से मिलबा चालो ऐ संगि सिणगारों।।
नीर गंगाजल सिर पर डारो कचरो परै विडारो ए।
मन मैले न मलम ल धोल्यो साफ हुवैन सारोए।
सत की स्यालू ओढ सुहागण, प्रेम की पटली मारो थे।
राम नाम को गोटो लगाकर ज्ञान घुंघटो सारो थे।।
और पियो मेरे दाय कोनी आवै पियो कान करतारो ये।
मेरो पियो मेरे घट में बसत हे पलक हुबै न न्यारो ये।।[18]

इसमें प्रकट होता है कि आत्मा परमात्मा के मिलन में गुरू की सबसे बडी भूमिका है वही उसकी अज्ञानता दूर करता है और वही साधक के मन में परमतत्व के प्रति प्रेम जागृत करता है– अमृतनाथ कहते है–

गुरू बिन मिलता नहीं रे अवधू आत्म तत्व का ज्ञान।।
खुले गांठ नहीं कर्म की दूर न हो अभिमान।
जन्म मरण ना मिट सकै सुनियो संत सुजान।[19]

ओर इस तरह संत इस बात को बार–बार स्वीकार कर रहा है कि 'हेली मेरी सतगुरू राह बताई।' तभी आत्मा परमात्मा का मिलन होता है और साधक उस परमपद को प्राप्त होता है। इस प्रकार रहस्यभावना के अन्तर्गत प्रथम अवस्था में गुरू की कृपा ही प्रधान है गुरू के बिना सद्गति एवं ईश्वर की प्राप्ति असंभव है। संत कहते हैं –

कृपा गुरूदेव कारण हटि दुर्मति हमारी है
कृपा शुभज्ञान सूर्योदय घटी तम की अंधारी है।[20]

इसलिए साधक अत्यन्त दुःखी होकर गुरू से पुकार करता है –

सतगुरू दया विचारिये विलावत हो गई बेर।
क्यों सुनी मेरी विनय कहां लगाई देर।।[21]

और साधक साफ–साफ कह देता है –

हेली गुरूबिना पंथ दुहेलेडा तिरणा किस विध होय।
पियो बसै मेरो अगमसी हौं मिलना किस विध होय।।[22]

रविदास कहते हैं –

सतगुरू बाण सबद का मारा भभक तार जागी।
सुरत कलाली प्याला पिया, फेर पीवों संगी साथी।।
प्याला पीवत देर नहीं लागी प्रेम भट्टी जागी।
पीय प्याला भीतर में उतरा स्त्री न छोडी बाकी।।[23]

इस तरह दाम्पत्य को प्रतीक मानकर परमात्मा रूपी प्रियतम का जितना वर्णन किया हे, वह संत रहस्य साधना की अमूल्य निधि है। इस दाम्पत्य भाव से रहस्य साधना में दोनों पक्षों संयोग और वियोग का भी चित्रण ऊपर है जिसमें माधुर्यमय रहस्यवाद प्रकट हुआ है।

सन्दर्भ

1 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 199
2 सरण मछंदर गोरख बोले : मदनलाल शर्मा पृ. 87
3 हिन्दी संत साहित्य में माधुर्यभाव : डॉ. राम चरण शर्मा पृ.60
4 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 42
5 हिन्दी काव्य धारा में प्रेम प्रवाह : परशुराम चतुर्वेदी पृ. 70
6 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 132
7 सरण मछंदर गोरख बोले : मदनलाल शर्मा पृ.19
8 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 42
9 वही, पृ. 44
10 नानकवाणी– पृ. 319
11 संत काव्य : परशुराम चतुर्वेदी पृ. 56
12 हिन्दी साहित्य में रहस्यात्मक प्रवृतियां : डॉ. बृज मोहन गुप्त पृ. 21
13 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 120
14 वही पृ. 131
15 वही पृ. 141
16 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 153
17 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 57
18 वही पृ. 70
19 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 68

20 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 75
21 वही पृ. 71
22 वही पृ. 213
23 अमृतवाणी : नरहरिनाथ पृ. 201

* * *